सरन

प्रजनन महिला चिकित्सक के रूप में डॉ. एस.के. बोरवणकर की कीर्ति कानपुर महानगर में शिखर की तरह अपने शीर्ष पर थी। शल्य क्रिया में उनकी दक्षता ने लोकचर्चा का स्वरूप ले लिया था। बड़े आत्मविश्वास के साथ वे कठिन रोगों में भी साधारण औषधियों से निदान खोजती थीं और अपरिहार्य परिस्थितियों में ही ऑपरेशन करती थीं।

अमरीका से उच्च शिक्षा लेकर भी वे भारतीय पद्धति को वरीयता देती थीं। आयुर्वेदिक औषधियों पर उनका विश्वास अटूट था। उन्होंने आयुर्वेदिक व घरेलू दवाइयों से बहुत से लोगों का उपचार सफलतापूर्वक किया था। हनुमानजी उनके इष्ट थे। शल्य चिकित्सा का दिन, यदि कोई व्यवधान न होता तो मंगलवार ही निर्धारित करती थीं।

चिकित्सा उनका व्यवसाय था और सेवाकार्य भी। उन्होंने चालीस हजार से ज्यादा ऑपरेशन किए थे और प्रचुर धन प्राप्त किया था। उनका कहना था, ''जो धन दे सकते हैं, उनसे लेकर मैं निर्धनों को सुविधा देती हूँ।''

कानपुर नगर के कई नर्सिंग होम में उनके दिन और घंटे नियत थे, लेकिन मुख्य रूप से गुरुनानक अस्पताल, शास्त्रीनगर में वे अपना समय देती थीं। यह अस्पताल उन्हें इसलिए प्रिय था, क्योंकि इसके निर्माण और विस्तार में उनका हाथ शुरू से ही रहा था।

उनकी चिकित्सा का सेवारूप हमें सर्वत्र देखने को मिल जाता था। निस्सहाय नारियों और बच्चों की सेवा करने में उन्हें प्रसन्नता होती थी। इस अस्पताल में उन्होंने अपने साथियों को एक सहायता कोष तैयार करने के लिए सहमत कर लिया था, जिससे उनका चिकित्सा सेवाकार्य सरलता से चल रहा था।

पतियों से प्रताड़ित विक्षिप्तप्राय महिलाएँ या निस्संतान होने के कारण उपेक्षित नारियाँ भी उनके मनोवैज्ञानिक और चिकित्सकीय अवदान से लाभान्वित होती थीं।

अपने दायित्व को सदैव गंभीरता से वरण करनेवाली डॉ. बोरवणकर ने अनेक निराश्रित विधवाओं को भी अपनी भुजाओं का सहारा देकर, सिर उठाकर चलने का साहस दिया था। पढ़ने में रुचि रखनेवाली कई विधवाओं को पढ़ने के अवसर दिए व उनकी पढ़ाई का पूरा खर्चा उठाया। नौकरी की आवश्यकता में उन्हें नियोजित किया। विवाह पूर्व के नाम सरन को उन्होंने असरन सरन सिद्ध किया। गुरुवार की शाम को वे घर पर नि:शुल्क उपचार करती थीं।

डॉ. एस.के. बोरवणकर ने किसी बच्चे को अपनी कोख से जन्म नहीं दिया, लेकिन वे हजारों बच्चों की आदरणीया माँ थीं। माँ की ममता तथा संवेदनशीलता की धरोहर उनके पास इतनी अधिक थी कि सहस्त्रों बच्चों को देने पर भी किसी को उसे पाने में निराशा नहीं थी। इस प्यार को पाने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होती थी। बच्चे उनसे आत्मीयता पाकर बड़ी सरलता और सहजता से विभोर हो जाते थे।

उनका घर बहुत से बच्चों का अपना घर था। उन्होंने किसी बच्चे के ऊपर अपनी मान्यता का बोझ नहीं रखा। किसी बच्चे को उन्होंने अपने धार्मिक संस्कारों में कैद नहीं किया। सभी को अपने पुराने धर्म को मानने और पालने की आजादी दी। उनके पालित या दत्तक पुत्र, अलीगढ़ मुसलिम विद्यालय में गणित विभाग के प्रवक्ता डॉ. खान इसके प्रमाण हैं।

इस घर से बच्चे खेल के मैदान में जाते थे। उनको किसी प्रकार की हीनता का बोध नहीं होता था। अच्छे कपड़ों की कमी का अनुभव वे नहीं करते थे। वे भूल जाते थे, पुरानी गरीबी और अभावों में कसमसाती जिंदगी।

बच्चों की दिनचर्या में संगीत का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके घर में कोई गाता था तो कोई वाद्य यंत्र बजाने में तन्मय हो जाता था।

राष्ट्रीय एकता के लिए भाषण देनेवाले वक्ताओं की भीड़ में डॉ. एस.के. बोरवणकर का चेहरा अलग ही नजर

आता था। उनके इस निर्माण कार्य में उनके पति डॉ. जयराम बोरवणकर का सहयोग भी प्रशंसनीय था। आई.आई.टी. कानपुर में गणित विभाग के प्रमुख होकर भी वे बच्चों में बच्चे बन जाते थे और उनके साथ आमोद-प्रमोद में अपना समय बिताकर नई ऊर्जा और शक्ति ग्रहण करते थे। डैडी के रूप में 'जे' उनके लिए सबकुछ थे। कानपुर से बाहर भी उनके बच्चे दूर के अच्छे स्कूलों में शिक्षा पाते, हॉस्टल में रहते और उनका पूरा खर्च वे खुशी-खुशी उठाते थे।

बहुत से अनाथ बच्चों को अपनानेवाली डॉ. बोरवणकर उनकी सर्वप्रिय माता थीं। प्रजनन से लेकर जीविकोपार्जन की लंबी जिम्मेदारी ओढ़नेवाली माँ। इस तरह बच्चों की संस्कार-यात्रा में शिक्षा और सामाजिकता से उन्होंने उनके दोनों पैरों को मजबूत बनाया था।

आजादी मिलने के बाद भी विस्थापित श्रमिकों के बच्चों की पढ़ाई की समस्या पर कोई ठोस सरकारी नीति नहीं बन सकी। श्रमिकों के बच्चे अस्थायी निवास करते हैं और कार्य पूर्ण होने पर अगले प्रवास के लिए चल पड़ते हैं। आई.आई.टी. कानपुर में भी विस्थापित श्रमिकों के बच्चे हैं, जिनकी पढ़ाई के लिए श्रीमती विजया रामचंद्रन् (महामहिम स्व. व्यंकटरमण राष्ट्रपति की पुत्री) और प्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री गिरिराज किशोर तथा श्रीमती बोरवणकर आदि ने रात्रिकालीन कक्षाओं के परिचालन की व्यवस्था की थी।

डॉ. एस.के. बोरवणकर ने जहाँ बच्चों की पढ़ाई के लिए आर्थिक सहयोग दिया, वहीं उन्हें ठेकेदारों का कोपभाजन भी बनना पड़ा था। रात्रिकालीन कक्षाओं के कारण ठेकेदार को बालश्रमिक प्राप्त करने में कठिनाई होती थी। इस प्रकार के बच्चों को शिक्षा सुलभ कराने का कार्य निरापद नहीं था। कई लोगों के अवरोध-विरोध झेलने का दुरूह कार्य करते रहने में भी उनकी रुचि यथावत् थी।

कल्याणपुर में ही उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के नाम पर एक हाईस्कूल स्थापित किया। चौधरी नवाब सिंह ने अपनी कीमती जमीन इस परोपकार के लिए दे दी थी। वर्तमान में विद्यालय के भवन-निर्माण का कार्य चल रहा है, फिर भी वहाँ लगभग एक हजार बच्चे शिक्षा लाभ प्राप्त करते हैं। यह विद्यालय शासकीय अनुदान पर निर्भर नहीं है। डॉ. बोरवणकर ने अन्य समाज-सेवियों से सहायता और सहयोग प्राप्त किया था।

अपने शैक्षिक अभियान में डॉ. एस.के. बोरवणकर बच्चों के स्वास्थ्य की परीक्षा समय-समय पर करती रहती थीं और निर्देश के अतिरिक्त चिकित्सा सुविधा भी प्रदान करती थीं। सहयोगी चिकित्सकों द्वारा उनका यह बड़ा काम आज भी सहजता से चल रहा है।

कल्याणपुर के पास ही वाजपेयी नगर बस्ती को डॉ. एस.के. बोरवणकर ने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। इसमें नालियों, सड़कों और बिजली का प्रबंध कराया। नलकूप खुदवाए। समय-समय पर वहाँ जाकर वे रोगियों का उपचार करती थीं।

कानपुर में सांप्रदायिक विस्फोट से संकट की घड़ियों में खतरा उठाकर वह अपनी गाड़ी में आटा व आलू के बोरे लेकर जाती थीं और सहायता करती थीं।

उन्होंने एक क्रांतिकारी सिख परिवार में जन्म लिया। सन् 1890 में हाई स्कूल की छात्रा के रूप में उनकी दो घटनाएँ स्मरणीय हैं। श्रीमती इंदिरा गांधी हिमाचल प्रदेश में सरन के स्कूल में आया करती थीं। वे गरीबों और असहायों के लिए एफ.सी.ए. आर.ई. एजेंसी चलाती थीं। उनके साथ मिलकर पार्सल, खाने के पैकेट वितरित कराने में सरन कौर (भावी डॉ. एस.के. बोरवणकर) बहुत सहयोग देती थीं। उनकी रुचि एन.सी.सी. में थी और राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने गणतंत्र दिवस पर उनको सर्वश्रेष्ठ कैडेट के रूप में सम्मानित किया था।

भोपाल में एम.बी.बी.एस. की छात्रा थीं। यहीं उनका परिचय श्री जयराम बोरवणकर से हुआ। पे्रम हुआ और वे

अंतरजातीय विवाह करने अमरीका गईं।

सेवा कार्य से परिचित मदर टेरेसा ने डॉ. बोरवणकर को एक चिट लिखकर दी—

'God loves you and you love his people just the way he loves you.'

बच्चों की सेवा करना डॉ. एस.के. बोरवणकर के लिए ईश्वर की पूजा करना था। बच्चों की मुसकान उन्हें लुभाती थी। बच्चों की तोतली भाषा में उन्हें सूर और तुलसी का वात्सल्य रस प्राप्त होता था। बच्चों की आँखों में उन्हें राष्ट्र का भविष्य दिखाई देता था। बच्चों के सपने साकार करने में उन्हें अलौकिक आनंद आता था। मराठी में एक कहावत है, 'बाल माझा देव'—बच्चा मेरा देवता है। इस बाल भगवान् को जातियों, वर्गों और विभाजन की श्रेणियों में न बाँटकर उन्होंने उदार प्रकृति की तरह अपना असीम स्नेह प्रदान किया था।

मराठी के लोकप्रिय उपन्यासकार साने गुरुजी ने कहा है, 'जो लोग बच्चों से अपना नाता जोड़ लेते हैं, वे इस रीति से भगवान् के प्रिय बन जाते हैं।' डॉ. एस.के. बोरवणकर ने बाल भगवान् की पूजा कर अपने जीवन को सार्थक किया था। सन् 1855 में भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर ने उनकी इस प्रवृत्ति को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित किया था।

रोपड़ में एक प्रसिद्ध हकीम था। वह गुरु नानकजी का अनन्य आराधक था। उसकी भक्ति देखकर एक दिन गुरुनानक देवजी उसके घर गए। हकीम को एक रोगी को देखने जाना था। उसने गुरुजी को आसन दिया, प्रणाम किया और बताकर चला गया। गुरुजी के आने से अधिक उसके लिए अपना कर्तव्य था, रोगी को पहले देखना। गुरुजी ने इसे अपनी ही सेवा माना और प्रतीक्षा करते रहे।

आए दिन ऐसे अवसर रात-बिरात आते ही रहते थे, जब डॉ. बोरवणकर को रोगोपचार के लिए सुदूर आई.आई.टी. परिसर से कानपुर शहर भागना पड़ता था, लेकिन वह घटना मैं भूल नहीं सकता, जबकि उनके परमप्रिय श्वसुर अन्नाजी दिवंगत हो गए थे। शव घर में था और वे आँखों से आँसू बहातीं आगतजनों से दूर किसी महिला रोगी की जान बचाने के लिए गुरुनानक अस्पताल जाने के लिए रवाना हो गई थीं।

❑